कपड़ा काटता है। इसी प्रकार मूल्य का निर्धारण न तो केवल माँग और न केवल पूर्ति द्वारा होता है, वरन् माँग एवम् पूर्ति की सापेक्षिक शक्तियों द्वारा ही मूल्य का निर्धारण होता है। पूर्ण - प्रतियोगिता की स्थिति में जिस बिन्दु पर वस्तु की माँग एवम् पूर्ति एक - दूसरे के बराबर हो जाती है इसी बिन्दु पर मूल्य का निर्धारण होता है। इस बिन्दु को संतुलन बिन्दु (equilibrium point) तथा उस पर निर्धारित मूल्य को संतुलन मूल्य (equilibrium price) कहते हैं।

**माँग का नियम (LAW OF DEMAND):** किसी वस्तु का मूल्य अधिक रहने पर उसकी माँग कम हो जाती है तथा मूल्य में कमी होने से माँग में वृद्धि होती है। माँग का नियम यह बताता है कि किस प्रकार किसी वस्तु के मूल्य में कमी होने पर क्रेता उसकी माँग अधिक करते हैं। निम्नलिखित तालिका में विभिन्न मूल्य पर कलमों की माँग को दिखलाया गया है।

| मूल्य प्रति कलम | कलम की माँग |
|---|---|
| 12 रु० | 100 |
| 10 रु० | 200 |
| 8 रु० | 300 |
| 6 रु० | 400 |
| 4 रु० | 500 |

Scanned with CamScanner

तालिका से स्पष्ट है कि कलम का मूल्य जब 12 रु० प्रति कलम होता है तो क्रेता केवल 100 कलमों की माँग करता है लेकिन जब कलम का मूल्य 10 रु० हो जाता है तो माँग बढ़कर 200 रु० हो जाती है। अत: जैसे-जैसे मूल्य में कमी होती है वैसे-वैसे कलम की माँग बढ़ती जाती है।

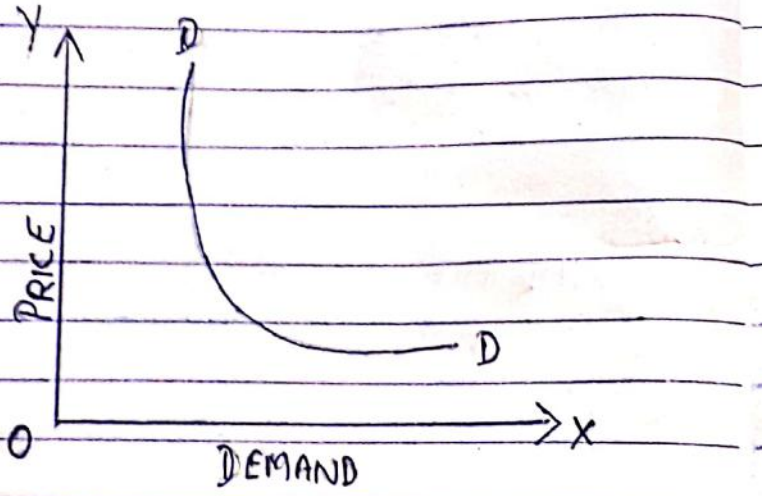




## पूर्ति का नियम (LAW OF SUPPLY):

पूर्ति का नियम यह बताता है कि मूल्य बढ़ने पर पूर्ति बढ़ती है तथा मूल्य घटने पर पूर्ति में कमी होती है। इस प्रकार पूर्ति का नियम माँग के नियम के ठीक विपरीत होता है। मूल्य बढ़ने पर विक्रेता पूर्ति को इसलिए बढ़ाते हैं क्योंकि उन्हें अधिक मुनाफा होता है तथा मूल्य घटने पर मुनाफा में कमी होती है। जिसके कारण वे पूर्ति को घटा देते हैं। निम्न-लिखित तालिका में विभिन्न मूल्य पर कलम